



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-4 Shalok-9 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय चार-श्लोक नौ | PDF

अध्याय 4 – ज्ञान कर्म संन्यास योग श्लोक 9

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥9॥
सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

हे अर्जुन! जो मनुष्य मेरे दिव्य जन्म और कर्मों को वास्तविक रूप से जान लेता है, वह शरीर त्यागने के बाद पुनः जन्म नहीं लेता, बल्कि मुझे प्राप्त हो जाता है।

विस्तृत व्याख्या

भगवान के जन्म और कर्म दिव्य हैं

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण अपने जन्म और कर्मों के दिव्य स्वरूप का गहरा रहस्य बताते हैं।

पिछले श्लोकों में भगवान ने बताया कि वे धर्म की रक्षा,



अधर्म के विनाश और धर्म की पुनः स्थापना के लिए युग-युग में प्रकट होते हैं। अब इस श्लोक में वे बताते हैं कि जो व्यक्ति उनके जन्म और कर्मों की दिव्यता को तत्त्वतः, अर्थात् वास्तविक और सही रूप में समझ लेता है, वह जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है।

भगवान का जन्म सामान्य जीवों के जन्म के समान नहीं है। जीव अपने कर्मों और पूर्व संस्कारों के कारण जन्म लेता है, जबकि भगवान अपनी दिव्य शक्ति और स्वतंत्र इच्छा से संसार में प्रकट होते हैं।

दिव्य जन्म का वास्तविक अर्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि उनका जन्म दिव्य है।

इसका अर्थ यह है कि भगवान का प्रकट होना कर्मबंधन, अज्ञान या किसी सांसारिक मजबूरी के कारण नहीं होता। वे अजन्मा और अविनाशी होते हुए भी अपनी योगमाया और दिव्य शक्ति के माध्यम से संसार में प्रकट होते हैं।

सामान्य जीव जन्म और मृत्यु के नियमों से बंधा होता है, लेकिन भगवान उन नियमों के अधीन नहीं होते। उनका प्रकट होना जीवों के कल्याण और धर्म की स्थापना के लिए होता है।

इसलिए भगवान के जन्म को केवल एक साधारण ऐतिहासिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि उनके दिव्य स्वरूप और उद्देश्य के रूप में समझना चाहिए।



भगवान के कर्म भी दिव्य हैं

भगवान केवल अपने जन्म में ही दिव्य नहीं हैं, बल्कि उनके कर्म भी दिव्य हैं।

उनके सभी कार्य किसी व्यक्तिगत इच्छा, स्वार्थ या कर्मफल की प्राप्ति के लिए नहीं होते। भगवान के कर्म संसार के कल्याण, धर्म की रक्षा और जीवों के आध्यात्मिक उत्थान के लिए होते हैं।

भगवान के कर्मों को समझने का अर्थ केवल उनके बाहरी कार्यों को जानना नहीं है, बल्कि उनके पीछे छिपे दिव्य उद्देश्य को समझना भी है।

जब साधक यह समझता है कि भगवान के सभी कर्म निःस्वार्थ, पूर्ण और दिव्य हैं, तब उसके भीतर भगवान के प्रति श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक ज्ञान का विकास होता है।

तत्त्वतः जानने का अर्थ

श्लोक में भगवान ने विशेष रूप से “तत्त्वतः” शब्द का प्रयोग किया है।

तत्त्वतः जानने का अर्थ केवल भगवान के जन्म और कर्मों के बारे में सुन लेना या पढ़ लेना नहीं है। इसका अर्थ है भगवान के दिव्य स्वरूप, उनकी शक्ति और उनके प्रकट होने के वास्तविक उद्देश्य को आध्यात्मिक समझ के साथ जानना।

सच्चा ज्ञान तब उत्पन्न होता है जब व्यक्ति केवल बाहरी रूप को नहीं देखता, बल्कि भगवान की दिव्यता को श्रद्धा, ज्ञान और अनुभूति के माध्यम से समझने का प्रयास करता है।



यह ज्ञान मनुष्य को संसार के अस्थायी आकर्षणों से ऊपर उठाकर परम सत्य की ओर ले जाता है।

पुनर्जन्म से मुक्ति

भगवान कहते हैं कि जो व्यक्ति उनके दिव्य जन्म और कर्मों को तत्त्वतः जान लेता है, वह शरीर त्यागने के बाद पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होता।

सामान्य जीव अपने कर्मों, इच्छाओं और आसक्तियों के कारण बार-बार जन्म और मृत्यु के चक्र में आता रहता है।

लेकिन जब व्यक्ति भगवान के वास्तविक स्वरूप को समझता है और उसके भीतर सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान तथा भक्ति जागृत होती है, तब वह कर्मबंधन से मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ता है।

इस श्लोक में भगवान मुक्ति का एक महत्वपूर्ण मार्ग बताते हैं— भगवान के दिव्य स्वरूप और कर्मों का वास्तविक ज्ञान।

भगवान को प्राप्त होना

भगवान कहते हैं—“मामेति”, अर्थात् वह मुझे प्राप्त होता है।

भगवान को प्राप्त करने का अर्थ परमात्मा के साथ सर्वोच्च आध्यात्मिक संबंध को प्राप्त करना है। यह स्थिति जन्म और मृत्यु के बंधन से परे मानी जाती है।

जब साधक अपने जीवन को भगवान के प्रति समर्पित करता है और ज्ञान, भक्ति तथा निःस्वार्थ कर्म के मार्ग पर आगे बढ़ता है,



तब उसका जीवन आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में परिवर्तित होने लगता है।

इस प्रकार भगवान की प्राप्ति केवल किसी सांसारिक उपलब्धि का नाम नहीं, बल्कि आत्मा की परम आध्यात्मिक स्थिति की प्राप्ति है।

ज्ञान और भक्ति का संबंध

इस श्लोक में ज्ञान और भक्ति दोनों का सुंदर संबंध दिखाई देता है।

केवल बौद्धिक रूप से भगवान के बारे में जानकारी प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है। भगवान के दिव्य स्वरूप को सही रूप में समझने के लिए श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक अनुभव की भी आवश्यकता होती है।

जब ज्ञान भक्ति से जुड़ता है, तब व्यक्ति भगवान के जन्म और कर्मों के दिव्य रहस्य को अधिक गहराई से समझ सकता है।

यह समझ साधक के भीतर अहंकार, आसक्ति और सांसारिक इच्छाओं को कम करने में सहायक होती है।

पिछले श्लोक से संबंध

श्लोक 8 में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने अवतार के उद्देश्य को स्पष्ट किया था।

वे साधुओं की रक्षा, दुष्कर्म करने वालों के अधर्म का अंत करने और धर्म की पुनः स्थापना के लिए युग-युग में प्रकट होते हैं।



अब श्लोक 9 में भगवान बताते हैं कि जो व्यक्ति उनके इस दिव्य जन्म और कर्मों के वास्तविक स्वरूप को समझ लेता है, वह जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर भगवान को प्राप्त करता है।

इस प्रकार श्लोक 7 और 8 भगवान के अवतार के समय और उद्देश्य को बताते हैं, जबकि श्लोक 9 उनके दिव्य जन्म और कर्मों को जानने के आध्यात्मिक फल को स्पष्ट करता है।

Jnana Karma Sannyasa Yoga in Practice

यह श्लोक साधक को केवल भगवान के बाहरी स्वरूप या लीलाओं तक सीमित रहने के बजाय उनके दिव्य ज्ञान को अपने जीवन में समझने और अपनाने की प्रेरणा देता है।

Jnana Karma Sannyasa Yoga के अनुसार व्यक्ति को सही ज्ञान के साथ अपने कर्म करने चाहिए और कर्मों के फल के प्रति आसक्ति को धीरे-धीरे त्यागना चाहिए।

भगवान के कर्मों से प्रेरणा लेकर साधक को भी अपने कर्तव्यों को स्वार्थ से मुक्त होकर, दूसरों के कल्याण की भावना से और भगवान के प्रति समर्पण के साथ करना चाहिए।

ज्ञान, निःस्वार्थ कर्म और भक्ति का यह मार्ग व्यक्ति को कर्मबंधन से ऊपर उठने और आध्यात्मिक मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ने में सहायता करता है।

मुख्य बिंदु

- भगवान श्रीकृष्ण का जन्म और कर्म दिव्य हैं।



- भगवान का प्रकट होना सामान्य जीव के जन्म के समान नहीं है।
- भगवान कर्मबंधन के कारण जन्म नहीं लेते।
- भगवान अपनी दिव्य शक्ति और इच्छा से संसार में प्रकट होते हैं।
- भगवान के कर्म संसार के कल्याण और धर्म की स्थापना के लिए होते हैं।
- तत्त्वतः जानने का अर्थ भगवान के दिव्य स्वरूप को वास्तविक रूप से समझना है।
- भगवान के जन्म और कर्मों की दिव्यता को समझने वाला पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त होता है।
- भगवान को प्राप्त करना सर्वोच्च आध्यात्मिक उपलब्धि है।
- ज्ञान, भक्ति और निःस्वार्थ कर्म साधक की आध्यात्मिक उन्नति में सहायक हैं।
- यह श्लोक जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति का मार्ग बताता है।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक केवल भगवान श्रीकृष्ण के अवतार के बारे में जानकारी देने वाला श्लोक नहीं है, बल्कि मुक्ति के गहरे आध्यात्मिक सिद्धांत को प्रकट करता है।

भगवान का जन्म और कर्म दिव्य हैं क्योंकि वे किसी कर्मफल, इच्छा या सांसारिक बंधन से उत्पन्न नहीं होते।



भगवान अपनी स्वतंत्र दिव्य शक्ति से जीवों के कल्याण के लिए संसार में प्रकट होते हैं।

इस श्लोक का गहरा संदेश यह है कि जब साधक भगवान के दिव्य स्वरूप और उनके कर्मों के वास्तविक रहस्य को समझता है, तब उसका दृष्टिकोण सांसारिक सीमाओं से ऊपर उठने लगता है।

भगवान को तत्त्वतः जानना व्यक्ति को यह समझने में सहायता करता है कि आत्मा का वास्तविक लक्ष्य केवल सांसारिक सुखों की प्राप्ति नहीं, बल्कि परम सत्य की प्राप्ति है।

जब व्यक्ति ज्ञान, भक्ति और समर्पण के साथ अपने जीवन को आध्यात्मिक दिशा देता है, तब उसकी कर्मों और इच्छाओं से जुड़ी आसक्तियाँ धीरे-धीरे कम होने लगती हैं।

इस प्रकार यह श्लोक साधक को प्रेरित करता है कि वह भगवान के दिव्य स्वरूप को समझे, उनके प्रति श्रद्धा और भक्ति विकसित करे तथा अपने कर्मों को निःस्वार्थ भाव से करते हुए परमात्मा की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़े।

पदों का भावार्थ

जन्म – जन्म, प्रकट होना

कर्म – कार्य, दिव्य कर्म

च – और

मे – मेरे

दिव्यम् – दिव्य, अलौकिक



एवम् – इस प्रकार

यः – जो

वेत्ति – जानता है, समझता है

तत्त्वतः – वास्तविक रूप से, सत्य के अनुसार

त्यक्त्वा – त्यागकर

देहम् – शरीर को

पुनर्जन्म – पुनः जन्म

न – नहीं

एति – प्राप्त करता है

माम् – मुझे

एति – प्राप्त होता है

सः – वह

अर्जुन – हे अर्जुन

श्लोक का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो व्यक्ति उनके दिव्य जन्म और कर्मों को वास्तविक रूप से समझता है, वह शरीर त्यागने के बाद पुनः जन्म नहीं लेता, बल्कि भगवान को प्राप्त करता है।



यह श्लोक हमें सिखाता है कि भगवान के स्वरूप को केवल बाहरी दृष्टि से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान और श्रद्धा के साथ समझना चाहिए।

ज्ञान, भक्ति, समर्पण और निःस्वार्थ कर्म के माध्यम से मनुष्य कर्मबंधन और सांसारिक आसक्तियों से ऊपर उठ सकता है। भगवान के दिव्य जन्म और कर्मों के वास्तविक रहस्य को समझना साधक को परमात्मा की प्राप्ति और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति की दिशा में प्रेरित करता है।

RELATED ARTICLE



Chapter-4 Shalok-7



Chapter-4 Shalok-8



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

